## आरती श्रीगणपतीची २

स्थापित प्रथामारंभी तुज मंगलमूर्ती। विघ्नें वारुनि करिसी दिनेच्छा पुरती। ब्रह्मा विष्णू महेश तीघे स्तुति करिती। सुरवर मुनिवर गाती तुझिया गुणकीर्ती। जय देव जय देव जय जय गणराजा। आरती ओवाळूं तुजला महाराजा।।१।। एकदंता स्वामी हे वक्रतुंडा। सर्वांआधी तुझा फडकतसे झेंडा। लप लप लप लप लप लप हालवि गजशुंडा। गपगप मोदक भिक्षिस घेऊन करि उंडा।।२।। शेंदुर अंगीं चर्चित शोभत वेदभुजा। कर्णी कुंडल झळके दिनमणि उदय तुझा। फरशांकुश करि तळपे मूषक वाहन तुझा। नाभीकमलावरती खेळत फणिराजा।।३।। भाळी केशरि गंधावरी कस्तुरी टीळा। हीरेजडित कंठी मुक्ताफळ माळा। माणिकदास शरण तुज पार्वतीबाळा। प्रेमें आरति ओवाळिन वेळोवेळां।।४।।